Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

जीते-मरते गांधी : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधीवाद पर विचार

गौरव
शोध छात्र,
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 116-121
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 12 Oct 2020
Published : 20 Oct 2020

सारांश – अपने समय–काल में किसी व्यक्ति के प्रासंगिक विचारों की, किसी अन्य समय–काल में प्रासंगिकता दो पूर्णत: भिन्न बातों पर निर्भर करती है। पहला, समय–काल की सादृश्यता एवं दूसरा विचारों की व्यपकता, जो सभी समय–कालों में उपयुक्त हो। वर्तमान भारत एवं विश्व के परिप्रेक्ष्य में गांधी के विचार दोनों ही आधारों पर प्रासंगिक दिखते हैं। गांधी के समकाल की बहुत सी परिस्थितियाँ आज भी विद्यमान है। यथा अश्पृश्यता, अशिक्षा, पूंजीवादी शोषण, साम्प्रदायिकता, वर्चस्ववादी समाज मे विभिन्न तबकों का दमन आदि। इनके ख़िलाफ़ संघर्ष में आज भी गांधी के विचार एवं संघर्ष प्रभावी हैं। विभिन्न समाज सुधारक, पर्यावरणवादी इन मार्गों के माध्यम से अपने संघर्ष में सफल हुए हैं। दूसरा, बदलती परिस्थितियों में भी गांधी के विचार समान रूप से उपयोगी हैं। राज्य–व्यक्ति सम्बन्ध, मानव अधिकार, संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान, मानवता, धार्मिक–सांस्कतिक सहिष्णुता जैसे गांधी के विचार प्रत्येक समय–काल मे उपयोगी रहेंगे। क्योकि ये मूल्य ही मानव सभ्यता व मानव सह–सम्बन्ध के आधार है, जिनपर मानवजाति का अस्तित्व निर्भर है।

मुख्य शब्द – जीते–मरते, गांधी, वर्तमान, गांधीवाद, भारत, अश्पृश्यता, अशिक्षा, पूंजीवादी, साम्प्रदायिकता।

महात्मा गांधी की मृत्यु पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने देश को संबोधित करते हुए कहा था– "एक अंधेरा सा छा गया है....हमारे देश के, राष्ट्र के, पिता का देहांत हो गया है। हमारी जो बड़ी–बड़ी उम्मीदें थी, एकदम ख़त्म सी हो गयी और हम निराश हो गए हैं।[1]" ये उद्गार निश्चित रूप से नेहरू के मस्तिष्क से नहीं अपितु उनके हृदय के कम्पन से निकले भावुक स्वर थे। जो अपने किसी प्रिय के चले जाने पर स्वाभाविक रूप से प्रकट होते हैं। अपने संबोधन में वह

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आगे संयत होने पर महात्मा गांधी के व्यक्ति–रूप से महात्मा गांधी की विरासत पर अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए बोलते हैं– "आख़िर में वह गए, देहांत उनका हुआ, लेकिन न वह हिंदुस्तान को छोड़ेंगे न कभी हिंदुस्तान उन्हें छोड़ सकता है।.. वह रोशनी कभी खत्म नहीं हो सकती। आज से हज़ार वर्ष बाद भी वह चमकेगी और इस देश और दुनिया को चमकएगी।[2]" नेहरू स्पष्ट कर रहे थे कि बापू का नश्वर शरीर तो समय के गॉल में समा सकता है किंतु उनके द्वारा उद्घाटित सत्य व अहिंसा का उपदेश सदियों तक मानवता का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। ये वो मार्ग है जो न समय के तूफान में खोएगा न ही अंधकार में विस्मृत होगा।

आज महात्मा गांधी की मृत्यु के महज़ 70 वर्षों में ही उनके विषय में लिखे जा रहे तमाम लेखों, विमर्शों एवं आलोचनात्मक मूल्यांकनों में इन शीर्षकों पर बड़ा आश्चर्य होता है। जो निम्नवत रूपों में विभिन्न बौद्धिक पत्र–पत्रिकाओं से लेकर पुस्तकों में चर्चा का विषय बने रहते हैं –

- क्या आज भी गांधीवाद प्रासंगिक है ?

- क्यों महात्मा गांधी आज भी प्रासंगिक है ?[3]

- महात्मा गांधी और आज।[4]

- महात्मा गांधी 150 वीं जयन्ती : पक्ष-विपक्ष।[5]

इसी प्रकार से विभिन्न आलेख शब्दों की बाज़ीगरी से देखने–पढ़ने को मिलते रहते है। ऐसे लेखों में ज़ाहिर है, आगे समर्थन या विरोध में विद्वतापूर्ण मूर्खता से भरे, अधकचरे ज्ञान पर आधारित विवेचन होते हैं। जो निश्चित रूप से महात्मा गांधी एवं उनके दर्शन की खंडित व्याख्या की परिणति हैं।

सर्वप्रथम महात्मा गांधी के विचारों एवं उनकी शिक्षाओं के मूल उद्गम का संक्षेप में विश्लेषण करते हैं। महात्मा गांधी के विचार मनुष्य के हृदय से प्रस्फुटित होते थे और वहीं पर प्रभावित भी करते थे। मानवीय करुणा, प्रेम, सहृदयता उसके मूल आधार हैं। ये पवित्र मानवीय भावनाएं देश–काल से सीमातीत होती हैं। ये मानवता के सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक गुण हैं। ज़ाहिर है कि इन भावनाओं के गर्भ से उपजे विचार एवं संघर्ष कभी भी समय और क्षेत्र की परिधि में सीमित नहीं किये जा सकते हैं।

महात्मा गांधी के समस्त आंदोलन एवं सुधार की कार्यप्रणालियाँ इन्ही मानवीय भावनाओं पर आधारित होती थी। यद्यपि कभी–कभी समय और परिस्थिति की चादर उन भावनाओं को ढक लेती है, जिनके फलस्वरूप व्यक्ति एवं समाज के जीवन में दूषित भावनाएं अपनी जड़े जमा लेती है। जिनके फलस्वरूप संसार शोषण, असमानता एवं पाप का गढ़ बन जाता है। महात्मा गांधी का समस्त आंदोलन इन्ही दुष्ट परतों को हटाकर संसार में मानवता की सच्ची भावनाएं – करुणा एवं प्रेम पर आधारित आदर्श संसार का निर्माण था।

महात्मा गांधी के आंदोलन का भौतिक पक्ष द्वितीय स्तर पर आता है। जो उनके आदर्शों को मूर्तिमान बनाने के साधन मात्र है। आंदोलन के भौतिक या कार्यात्मक पक्ष में समय और परिस्थिति अनुसार नए प्रयोगों व नवीन रणनीतियों का आचार–व्यवहार प्रयोग में लाया जाता है। हम महात्मा गांधी के आंदोलनों में विभिन्न

कार्यप्रणालियाँ समय और उद्देश्य अनुसार देख सकते है। अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लेने के लिए उन्होंने कभी **सत्याग्रह**, **सविनय अवज्ञा**, से लेकर **करो या मरो** तक की विभिन्न प्रकार की नीतियों एवं कार्यप्रणालियों को अपने संघर्ष में प्रयुक्त किया। वहीं दूसरी तरफ अपने देश की समाजसेवा एवं अछूतोउद्धार के कार्यों के लिए 'रचनात्मक कार्यों' से लेकर **अनशनन** एवं **आमरण अनशन** तक जोखिम भरे रास्तों को अपने आंदोलन का हथियार बनाया। अपने अंतिम दिनों में साम्प्रदायिकता से जलते इस देश को बचाने के लिए गाँवो–कस्बों तक पैदल चलकर लोगों को समझाते एवं देश में लगी आग बुझाते रहे। आख़िर में इस हेतु स्वयं का बलिदान भी कर गए।

यहाँ कहने का आशय है कि भौतिक परिस्थितियों की भिन्नता के आधार पर गांधीवादी आंदोलन की कार्यप्रणालियाँ एवं नीतियाँ अलग–अलग हो सकती है, परन्तु उसका मूल तत्व अपरिवर्तित ही रहता है। वह तत्व था मनुष्य की आत्मा को झकझोड़ना, उसकी करुणा एवं प्रेमभावना का उद्घाटन करना। महात्मा गांधी का समस्त कार्य–व्यवहार सदैव इसी से प्रेरित होता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति में वह साहस, त्याग एवं मनुष्य के इन उच्च आदर्शों के प्रति विभिन्न साधन अपने प्रयोग में लाते रहे जो अनिवार्य रूप से **सत्य-अहिंसा** के मूल धरातल पर अवस्थित होते थे।

यदि बात आज महात्मा गांधी की प्रासंगिकता की हो रही है तो सर्वप्रथम इस तथ्य पर विचार किया जाना आवश्यक है कि **'क्या महात्मा गांधी स्वयं जिस युग में थे, वह उसके लिए प्रासंगिक थे ? ' या 'वह युग महात्मा गांधी के लिए प्रासंगिक था ? '** महात्मा गांधी जिस युग में सत्य व अहिंसा के संदेश पर आधारित, पीड़ित मानवता के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे। उसी युग में मानवता अपने इतिहास में सबसे बुरी तरह कुचली जा रही थी। सत्य और अहिंसा जैसे आदर्शों पर सर्वाधिक घने बादल छाए थे। साम्राज्यवाद, नस्लवाद, आर्थिक शोषण, महामारी, अकाल, साम्प्रदायिक द्वेष एवं महायुद्ध की विभीषिका उस युग की कड़वी सच्चाईयाँ थी। जब महात्मा गांधी साम्प्रदायिक दंगों को रोकने और शांति स्थापित करने के लिए अपने जीवन तक को दांव पर लगा दे रहे थे। उसी समय शांति हेतु, युद्ध समाप्ति के लिए एक बम से लाखों व्यक्ति मौत की नींद में सुला दिए जा रहे थे। जब महात्मा गांधी आजादी में सांस लेने की बात कर रहे थे, लाखों की सांसें गैस चैंबरों में घुट–घुट के खत्म हो रही थी। महात्मा गांधी के कार्यात्मक जीवनकाल में युद्ध एवं युद्ध जनित अपराधों व आपदाओं से 6–8 करोड़ व्यक्ति–बच्चे–स्त्रियाँ मौत की नींद सो चुके थे। संसार भर में अकाल एवं भुखमरी लोगों को अपने सैलाब में ले डूबा रहा था।

तो क्या वह समय महात्मा गांधी के सत्य व अहिंसा पर आधारित उनके विचारों एवं कार्यों के लिए उपयुक्त था? फिर भी महात्मा गांधी ने अपने विचारों को लाखों–करोड़ो भारतीयों के हृदय में रोपा, उसे विपरीत वातावरण में भी फलने–फूलने की प्रेरणादायी शक्ति प्रदान की। उस विपरीत समय के बरअक्स आज संसार मे कम ही अंधकार है। मानवाधिकार एवं आत्मनिर्णय के अधिकार आज पहले की अपेक्षा अधिक सर्वमान्य हैं। तो फिर आज यह प्रश्न कैसे उत्पन्न हो रहा कि वर्तमान की समस्याओं के समाधान में महात्मा गांधी के विचार और कार्य प्रासंगिक है कि नहीं?

वास्तव में ये प्रश्न गांधीवाद के सीमित वैचारिक विश्लेषण पर आधारित हैं। जब महात्मा गांधी एवं उनके दर्शन को केवल उसके कार्यात्मक रूप में ग्रहण कर उसके वैचारिक उद्गम को अवहेलित कर दिया जाता है और उस पर पर्याप्त वैचारिक विश्लेषण नहीं किया जाता है, तब ऐसे प्रश्न संशय के रुप में प्रस्तुत होते हैं।

महात्मा गांधी की प्रासंगिकता के संदर्भ में संशय का प्रमुख आधार वर्तमान समाज में उपस्थित कुछ नवीन समस्याओं के संदर्भ में ढूंढा जा सकता है। समाज में शोषण के ये नए रुप अपने पंजे में समाज और देश को जकड़ रहें है। उदाहरण के लिए नव–साम्राज्यवादी तथा वैश्वीकरण की आड़ में हो रहे विभिन्न आर्थिक व सामाजिक–सांस्कृतिक एवं संसाधनात्मक शोषण के रूप। इसी क्रम में अनियंत्रित विकास एवं निर्बाध उपभोक्तावादी प्रवृत्ति से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट, जो आज समूची मानवता को उसके मृत्यु द्वार को अग्रसर किये है। इसमें भी निम्न तबके के हाशियाकृत जनसमुदाय एवं गरीब देश ही प्रमुख ग्रास बन रहे हैं। इन अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के अतिरिक्त भारत के संदर्भ में देश की राजनीतिक व्यवस्था व जनमानस के मध्य का द्वंद एवं लोकतांत्रिक प्रणाली के भीतर नागरिक उपेक्षा, सैनिक दमन, उग्रपंथी वैचारिकी से भारत की सामासिक संस्कृति को उत्पन्न खतरा आदि अन्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं से समाज घिरा हुआ है।

इन समस्याओं से लड़ने के क्रम में जब हम आज गांधीवादी प्रक्रिया पर विचार करते हैं तो प्रारम्भिक दृष्टि से जो सतही निष्कर्ष प्राप्त होते हैं, उसी आधार पर ये स्वीकार कर लिया जाता है कि महात्मा गांधी का संघर्ष किन्ही अन्य परिस्थितियों में बिल्कुल अलग प्रकार के शोषण के विरुद्ध था। इनके किस प्रकार उपयोग से वर्तमान की समस्याओं का सामना किया जा सकता है? यहाँ पर सीमित गांधीवादी दृष्टि, जो आंदोलन के भौतिक तत्वों व कार्य–प्रणाली पर आधारित है, संशय का प्रमुख कारण है।

एक अन्य प्रकार के संशय का कारण गांधीवादी विचारधारा पर आधारित कतिपय आंदोलनों की असफलता, सीमित सफलता अथवा अल्पकालिक उत्तेजना जो क्षणभंगुर उन्माद के रूप में सफलता रहित होकर विलुप्त हो चुके हैं। इसी क्रम में गांधीवादी विचार से प्रेरित आन्दोलनों के गांधीवादी पद्धति से भिन्न होते हुए लक्षित उद्देश्यों से भटकाव है। उदाहरण के लिए 'अन्ना आन्दोलन' के नाम से जाना जाने वाला राजनैतिक सुधार आंदोलन, जो तात्कालिक उत्तेजना उत्पन्न कर अपने घोषित लक्ष्य से भटकते हुए अन्य उद्देश्यों को प्राप्त हुआ।

यहाँ पर यह विचारणीय है कि महात्मा गांधी की आंदोलन प्रक्रिया में लक्ष्य केंद्रित होकर एक–मुखी दिशा में कार्य संचालित नहीं किया जाता था। यह समस्त प्रक्रिया द्वि–मुखी एवं द्विदिशात्मक होती थी। इसमें सुधार के लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधक तत्वों के साथ ही सुधारक में भी आवश्यक सुधार को लक्ष्य किया जाता था। आंदोलनकर्ता को लक्ष्य प्राप्ति के लिए पहले समर्थ बनाया जाता था जिससे कि वह उस संघर्ष को दृढ़तापूर्वक चला सके और उन समर्थक तत्वों और स्थितियों को समाप्त कर सके जो किसी भी प्रकर की असमानता और शोषण के लिए उत्तरदायी हैं।

सुधारक <---------- गांधीवादी आंदोलन के तत्व ----------> लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं

महात्मा गांधी के **स्वराज** का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उनके अनुसार– "स्वराज एक पवित्र शब्द है, वह एक वैदिक शब्द है जिसका अर्थ आत्म–शासन और आत्म–संयम। अंग्रेजी शब्द 'इंडिपेंडेन्स' अक्सर सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त निरंकुश आज़ादी का या स्वच्छंदता का अर्थ देता है, वह अर्थ स्वराज के शब्द में नहीं है।[7]" महात्मा गांधी अपने **स्वराज** के लक्ष्य में केवल अंग्रेजों पर ही केंद्रित नहीं थे अपितु साथ ही भारतीय भी उनके इस लक्ष्य का प्रमुख केंद्र थे। वह कहा करते थे– "अगर स्वराज का अर्थ हमें सभ्य बनाना और हमारी सभ्यता को अधिक शुद्ध तथा मजबूत बनाना न हो, तो वह किसी कीमत का नहीं होगा।[8]" महात्मा गांधी अंग्रेजी सरकार से नैतिक युद्ध में भारतीयों के नैतिक विचारों को भी परिमार्जित कर रहे थे। वे स्वराज के फल को अंग्रेजी शासन के वृक्ष से तोड़ने के संघर्ष के साथ–साथ भारतीयों को उस फल के उचित उपभोग हेतु प्रशिक्षित भी कर रहे थे। इसी हेतु वह अंग्रेजो से संघर्ष के साथ ही **रचनात्मक कार्यों** एवं समाजसुधार के विभिन्न आंदोलन क्रियाशील किये हुए थे।

महात्मा गांधी अपनी पद्धति में शोषण अथवा अन्याय के स्वरूप का विश्लेषण करते थे। उसके आधार पर शोषक–शोषित के बीच के आधार संबंध पर ध्यान केंद्रित करते थे। इस प्रक्रिया में वे शोषितों पर सर्वप्रथम ध्यान देते थे। वे शोषितों को साहसपूर्ण ढंग से उस शोषण आधारित प्रक्रिया का प्रतिकार करने का सम्बल प्रदान करते थे। महात्मा गांधी ने एक स्थान पर कहा है कि– "अपने सक्रिय रूप में अहिंसा का अर्थ है ज्ञानपूर्वक कष्ट सहना। उसका अर्थ अन्यायी की इच्छा के आगे दबकर घुटने टेकना नहीं है, उसका अर्थ यह है कि अत्याचारी की इच्छा के खिलाफ़ अपनी आत्मा की सारी शक्ति लगा दी जाए।" कायरता उनकी दृष्टि में सबसे बड़ा पाप था जो किसी भी प्रकार के अन्याय को मौन समर्थन प्रदान करता है। वे प्रेरित करते थे अपने शोषण के बंधनों को काट, बंधन मुक्त मनुष्य के स्वाभिमानपूर्वक खड़े होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने हेतु। उनका मानना था कि प्रत्येक अन्याय एवं शोषण हमारी मूक सहमति पर ही आधारित होता है। वे इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया का, बलिदान का आग्रह करते थे। विक्टर. ई. फ्रैंकल अपनी पुस्तक **मैन्स सर्च फ़ॉर मीनिंग** में लिखते हैं– "वे समस्त शक्तियाँ जो आपकी सामर्थ्य से बाहर है, वे आपसे आपका सब कुछ छीन सकती है, लेकिन उनके साथ आप किस तरह पेश आये, ये वो आपसे कभी नहीं छीन सकती। इस पर सदैव आप का अधिकार होता है।"[9] महात्मा गांधी इस 'प्रतिक्रिया के अधिकार' को जीवित रखने पर बल देते थे। वे अन्याय के प्रति मूक समर्थन की प्रतिक्रिया को साहसपूर्ण प्रतिकार की प्रतिक्रिया में परिवर्तित कर देना चाहते थे।

आज के तथाकथित गांधीवादी आंदोलनों में इस दृष्टि का अभाव सा है। वे शोषण केंद्र को लक्षित कर उस पर अपना वार आरम्भ कर देते हैं। वे कभी उन हथियारों की क्षमता आंकने या उनकी क्षमता में वृद्धि कर उनको लक्ष्य पर केंद्रित नहीं करते। वे प्रशिक्षित सैनिको के बजाय भाड़े के सैनिकों का प्रयोग अपने आन्दोलन में करते है। वे महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों एवं आंदोलनकारियों में त्याग व बलिदान की भावना का संचार किये बगैर अपने लक्ष्य हेतु लड़ने निकल पड़ते हैं। संघर्ष में पीछे ये कमजोरियाँ उजागर होती है। **भीड़ के साथ आंदोलन करना और**

सत्याग्रहियों के साथ आंदोलन करने के मूलभूत अंतर है, इसे वो नज़रअंदाज कर जाते हैं। निष्कर्षत: वे निष्प्रभावी या असफल हो जाते हैं। उनका असफल होना गांधीवाद की प्रासंगिकता की कसौटी नहीं है।

यहाँ एक विशेष तथ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर समाजसेवा करना और गांधीवादी आंदोलन का संचालन करना मूल रूप से दो भिन्न चीजें है। समाजसेवा किसी विशेष रणनीति के बजाय करुणा और सेवाभाव की मांग करती है। परंतु गांधीवादी आंदोलन शोषितों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होते हुए विशेष रणनीति और व्यापक कार्यक्रम की माँग करता है। ये सभी संबंधित पक्षों के गहन विश्लेषण से उत्पन्न होती है। यदि गांधीवादी आंदोलन को उचित प्रकार से संचालित किया जाए तो वह प्रत्येक देश–काल एवं परिस्थिति में प्रासंगिक हो सकता है। मार्टिन लूथर किंग और नेल्सन मंडेला के आंदोलन इसके प्रमाण है।

अब रही बात महात्मा गांधी के मरने की तो महात्मा गांधी इस संसार मे अनंत काल तक जीते–मरते रहेंगे। जहाँ कहीं भी मानवता का दमन किसी भी रूप में होता रहेगा, वहां महात्मा गांधी की सांसें घुटती रहेंगी। जहाँ कहीं भी इसका प्रतिकार होगा वहां उनकी सांसे गतिमान होंगी। संसार मे जब कभी, जहाँ भी, सत्य–असत्य का संघर्ष होगा, महात्मा गांधी वहां सत्य की मशाल लिए खड़े मिलेंगे। आज महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के लिए नहीं, बल्कि स्वयं व मानवता की रक्षा के लिए महात्मा गांधी को याद किये जाने की जरूरत है। **यदि आज कहीं पर महात्मा गांधी के विचार आप्रासंगिक हो रहे हैं तो इसका कारण ये नहीं कि महात्मा गांधी हमारे लिए उपयुक्त नहीं रहे, बल्कि हम स्वंय उनके दिखाए मानवता के मार्ग पर चलने की सामर्थ्य खो चुके हैं। हम अपनी असफलता की कसौटी पर गांधी को नहीं कस सकते। हमें आत्ममंथन की आवश्यकता है कि देखें कि हमारे पैर कितने कमजोर हो चुके है, मानवता के उस मार्ग पर चलने को, जिसे उन्होंने दिखाया है।**

संदर्भ सूची–

1. महात्मा गांधी की मृत्यु पर जवाहर लाल नेहरू का देश को सम्बोधन। आकाशवाणी– 30 जनवरी, 1948।
2. पूर्वोक्त।
3. वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2011
4. आजकल, 21 अक्टूबर 2019
5. समयांतर: अक्टूबर 2019
6. यंग इंडिया: 21–2–1929
7. हिंदी नवजीवन: 7–1–1926
8. यंग इंडिया, 11–8–1940
9. मैन्स सर्च फ़ॉर मीनिंग – विक्टर. ई. फ्रैंकल, पृष्ठ– 6–7